"सूखते चिनार" : एक दृष्टि

डा० कविता मेहरोत्रा

कश्मीर हमारे देश का एक सम्वेदनशील मुद्दा है। जिसे हम धरा का स्वर्ग कहते हैं, आज वही नरक बना हुआ है। प्रकृति का वह सुन्दर पालना आज शवगृह बना हुआ है। एक के बाद एक होते आतंकी आक्रमण हमें अन्दर से तार-तार तो कर ही रहे है, हमारे मनोबल को भी कहीं न कहीं तोड़ रहे हैं। यह एक बहुत बडी विडम्बना है कि आज सैनिकों की जान देश की आन्तरिक सुरक्षा के लिए अधिक जा रही है। अभी हम पठानकोट हमले को भूल भी नहीं पाए थे कि उरी हमारे सामने उपस्थित हो गया जहाँ सुबह-सबेरे सेना के कैम्प में आक्रमण कर १८ सैनिकों को जिन्दा जला दिया गया। इस घटना के बाद से सारा देश शोक और आवेश से भरा हुआ है। मधु कांकरिया का उपन्यास-'सूखते चिनार' कश्मीर में सुलगते आतंकवाद की पृष्ठभूमि पर लिखा गया बेजोड़ उपन्यास है जिसमें लेखिका ने इस आतंकवाद की त्रासदी को बरवूबी दर्शाया है। वह इसके कारणों की भी पड़ताल करती है और उसके परिणामों की भी। एक सैनिक की दृष्टि से वह सम्पूर्ण कथा चलती है जो उसके मनोभावों को ही नही दर्शाती वरन् हमारे मर्म पर भी चोट करती चलती है। कथा का नायक संदीप कोलकाता के एक साधारण मारवाड़ी परिवार से सम्बन्ध रखता है। वह स्वप्न और ऊर्जा से भरपूर है और जीवन में कुछ नया करना चाहता है। भारतीय सेना का एक विज्ञापन उसे बड़ा आकृष्ट करता है - "यह विज्ञापन जिसे टाइम्स ऑफ इण्डिया के मुखपृष्ठ पर एक चमकती सुबह अपने दमकते हौसलों के साथ पढ़ा था उन्होने Nation needs you राष्ट्र को आपकी आवश्यकता है। आर्मी उनके लिए एक आदर्श हीरो बन गई थी। जिसे उनकी जरुरत थी। ...अठारह वर्ष की वह भावुक स्वप्निल उम्र और टाइम्स ऑफ इण्डिया का वह जादुई विज्ञापन। उन्हें लगा जिस चीज की तलाश थी उन्हे, वह चीज मिल गई है। एक रहस्यमयी दुनिया बुला रही थी उन्हे आओा आओ मेरे पास आओ। ...नहीं अब उसे इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला नहीं लेना है। उसे फौजी बनना है। ....वह चाहता था कोई होली क्रान्ति, कोई मिशन, कोई स्वप्न, कोई उदेश्य जीने के लिए जिन्दगी को सजाने के

लिए। उसे पूरा विश्वास था कि जीवन के अधूरेपन से, इस अपूर्णताबोध से उसे छुटकारा मिल सकता है तो सिर्फ फौजी बनकर।"[1] माँ बाप का विरोध भी सन्दीप को सेना में जाने से रोक नहीं पाता। किसी के कहने पर कि सेना में दुबले-पतले और चुस्त युवकों की आवश्यकता होती है। वह सारा सारा दिन धूप में खड़ा रहता ओर चूल्हे के पास अपने शरीर की सूखाता है। इसके बाद आरम्भ होती है सेना की कठोर ट्रेनिंग जो उसके सारे कोमल तन्तुओं को तोड़ डालती है-"ऐसा गढ़ती है आर्मी आदमी को किसी कुशल कुम्मकार की तरह कि फिर जीवन भर के लिए आदमी वह नहीं रह पाता है, जो वह था-इस दुनिया में घुसने से पूर्व। सब कुछ बदल जाता है उसका-देह, मन, आत्मा। आर्मी का मूलमन्त्र है - 'स्व को विसर्जित कर समूह में ढालना।"[2] संदीप की पोस्टिंग कश्मीर के गुण्ड इलाके मे होती है। कश्मीर उसे अभिभूत कर देता है परन्तु वहाॅ फैला आतंकवाद उसे दुखी कर देता है और वह सोचता है - "सोचो जरा सोचो कि कश्यप के नाम पर व कश्मीर जो सुदीर्घ समय तक भाईचारे, समन्वय और सहअस्तित्व का इतिहास रहा, कहाँ गए उसके उत्तराधिकारी? जहाँ हवाओं में करुणा बहती थी किसने घुसाई बारुद की गन्ध"[3]। बड़े बड़े लोगों की छोटी-छोटी भूल किस तरह इस सुन्दर घाटी को पूरी तरह आंतकवादी वारदातों से भर देती है। युवकों को बरगलाने में इस्लाम की भूमिका का चित्रण भी लेखिका बखूबी करती हैं - "यह वह कश्मीर है जो भूख और युद्ध दोनों का ही मारा है। इस कारण यहाँ लोग वर्त्तमान में कम और अधकचरे इतिहास निथक और कुरान में ज्यादा रहते है। इनकी दुनिया में न टी० वी है न रेडियो है, न संगीत है ओर न ही क्रिकेट है - क्योंकि इस प्रकार का आमोद प्रमोद इस्लाम के खिलाफ है। अब तुम्ही सोचो जो गाना नहीं सुनेगा, नाचेगा नहीं, थिरकेगा नहीं वह तो अपराधी ही बनेगा और तो और इनके लिए देश ओर राष्ट्र का भी कोई कन्सेप्ट नहीं है, वहाॅ सभी या तो इस्लामिक है या गैर इस्लामिक, यहाँ बच्चे जब से होश सम्मालते है उन्हें घर में, मदरसे में एक ही पाठ पढ़ाया जाता है - इस्लाम की राह पर चलो, सच्चे जेहादी बनो। तो ऐसे सभी गाँव आतंकवाद के लिए बहुत ही उर्वर इलाके हैं क्योंकि यहाँ जिहादी होना न सिर्फ परिवार के लिए समृद्ध और खुशहाल होना है, वरन् हीनता के मारे गरीब और बेरोजगार युवकों के लिए रोबदार होना, प्रतिष्ठित होना और अपनी ही नजरों में ऊपर उठ जाना भी होता है। जाहिर है, ऐसे युवक बहुत जल्दी ही शिकार हो जाते है पैसों के,

सस्ती लोकप्रियता के और जब तक वे समझ पाते हैं कि जिस इस्लाम खतरे में है का डर दिखाकर उन्हें आतंकवाद के जाल में फँसाया गया था, वह धोखा था, वे आतंकवाद के अजगर में बुरी तरह जकड़े जा चुके होते हैं।"[4]

केवल आतंकवाद ही नहीं सामान्य जीवन में व्यक्ति किस प्रकार सिस्टम का शिकार हो कर टूटता बिखरता है। यह भी अन्य पात्रों के माध्यम से इस उपन्यास में हम देख पाते हैं फिर चाहे वह बात सेना की हो या फिर मल्टीनेशनल कम्पनी में काम करने वाले युवकों की या इंजीनियरिंग के क्षेत्र की। व्यवस्था उसे हर ओर रौंदती है। यदि एक ओर कठोर सैनिक जीवन है जहाँ हर पल मौत का खतरा है तो दूसरी ओर सामान्य नागरिक जीवन भी उससे अलग कहाँ है। एक सैनिक अगर जीवन की अनिश्चितता को झेलता है तो दूसरी ओर हमारी कुशाग्रबुद्धि युवा पौध जो इंजीनियरिंग कॉलेज की ओर जाती है ओर रैगिंग का शिकार होती है ओर कई बार इस कारण जान से भी हाथ धो बैठती है। सन्दीप का मित्र इस ओर संकेत करता है "तो हीरो! तू यह मत सोच कि तू आर्मी में है इसलिए ज्यादा जकड़ा हुआ है ओर मैं नागरिक जीवन में हूँ इसलिए खुशहाल हूँ। मुझे तो लगता है कि हर स्तर पर चुनौतियाँ हैं, तनाव है। सम्पूर्ण सुख चैन कही नहीं है। जब तक जिन्दगी है, लहरें तो उठेंगी ही। बस यह समझ ले कि जिन्दगी का दूसरा नाम ही है, मुठभेड़, हर कदम पर पर मुठभेड़।"[5] तीसरा खतरा मल्टीनेशनल कम्पनियों में कार्यरत युवकों का है। जहाँ युवा समय से पहले ही वृद्ध हो रहा है। एम. एन. सी कम्पनियाँ जो अपने कर्मचारियों को मोटी तनखवाहें तो देती है लेकिन उसके साथ-साथ वे किस प्रकार उनका सकुन ओर स्वास्थ्य भी छीन लेती हैं। इसको सन्दीप के भाई सिद्धान्त ओर पत्नी के माध्यम से दर्शाया गया है- "उसने देखा था सिद्धान्त को रात-रात पढ़ाई करते। परीक्षा की तैयारी में घानी के बैल की तरह जुटते। फिर सफल होते। आगे बढ़ते। देश की क्रीमीलेयर बनते। ओर फिर दुनिया की सबसे प्रतिष्ठित बहुराष्ट्रीय कम्पनी के सेल्स टार्गेट को पूरा करने के लिए दिन रात मरते खपते। ..सप्ताह के पाचों दिन कम्पनी खाते में। इसी चिन्तन में कि कम्पनी का मुनाफा कैसे बढ़ाये। कुछ न कर पाने पर प्रमोशन न होने का खौफ। क्रीमीलेयर की कमाई राजा की तरह ओर जीवन गधे की तरह। न खाने की सुध न सोने की। दिन भर कान में मोबाइल। ओखों के आगे लेपटॉप ओर दिमाग में कम्पनी।

यदि आ रहा है पिछली बार जब मिलने गए थे भाई से तो आधे घण्टे के लिए भी पास नहीं बैठ पया था भाई। उन दिनों पीठ और कमर में जबरदस्त दर्द था सिद्धार्थ के, शायद दिन भर झुककर लैपटॉप पर काम करने के चलते। पर इतना भी समय नहीं था भाई के पास कि डॉक्टर के दिए सारे परीक्षण करवा पाए। बस पेनकिलर ओर इन्जेकशन खाता ओर निकल जाता काम पर।"[6]

इस आतंक के साए में एक स्त्री की दशा का वर्णन भी करना भी लेखिका नही भूलती। रुबीना जिससे संदीप प्रेम करते है, के माध्यम से हम यह जान पाते है कि स्त्री हर जगह पीड़ा में है। सन्दीप को रुबीना के भाई को भारकर दुःख है, ग्लानि है और वह उसकी भरपाई भी करना चाहता है। वह रुबीना को सहारा देना चाहता है। जेहादियों की ओर से जो तर्क दिया जाता है उसे भी रुबीना के माध्यम से लेखिका कहलवाती हैं। धर्म के नाम पर जिहाद करवाने वाले, इसलाम के नाम पर दंगा भड़काने वाले नेताओं का असली चरित्र क्या है। यह रुबीना हमें बताती है – "मजहब के सारे ताजिए हम गरीबों की देह के ऊपर ही टिके हुए है। मुझे मेरी अम्मी ने कभी तस्वीर तक नहीं खिंचवाने दी कि यह इस्लाम के खिलाफ है। .. मैने देखा कि तस्वीर खिंचवाने के खिलाफ फतवे जारी करने वाले मुल्ले मौलवी बड़े चाव से राजनेताओं के साथ न केवल तस्वीर खिंचवा रहे है वरन् उन्हें अखबारों में भी छपवा रहे हैं। इन मुल्लाओं ओर मौलवी से बढ़कर पाखण्डी कोई नहीं हैं। ये तो रक्तदान ओर सर्जरी को भी इस्लाम के खिलाफ ठहरा चुके हैं। बैंक के सूद और जीवन बीमा के खिलाफ भी फतवा पहले ही निकल चुका है। लेकिन सारे जेहादियों ओर नेताओं का बैंक में खाता है।"[7] फौज़ी से घृणा करने वाली रुबीना सन्दीप को शादी करने के लिए मना कर देती है। अन्तत: किस प्रकार आतंकवादियो का शिकार बनती है – " मैं पढ़ने में ध्यान लगाने लगी कि तभी किसी ने पीछे से मेरे मुँह में रुमाल ठूस दिया। मुझे चार बलिष्ट हाथों ने पकड़ा ओर घसीटते हुए नीचे तहखाने में ले गए ओर वहां बारी बारी से।"[8] ....मैंने तुम्हें ठुकराया क्योंकि मुझे लगता था कि हमारी तबाही के लिए हिन्दुस्तानी सरकार और फौज जिम्मेदार है, पर मेरे साथ जो हुआ वह किसी फौज या हिन्दुस्तानी ने नहीं किया – वरन् हमारे अपनों ने किया।"[8] यही नहीं फौज के सामन्ती चरित्र का वर्णन भी उपन्यास में यत्र तत्र मिलता है – 'आर्मी के नेता को किन्हीं शब्दोंसे चिढ़ है तो ये हैं क्यों क्या और कैसे"[9]

एक महत्वपूर्ण बात भी हमें लेखिका बताना नहीं भूलती है वह है आदिवासियों के साथ हुआ अन्याय। उनके नारकीय जीवन की झलक भी हमें बालदेव नामक पात्र के माध्यम से मिलती है। बालदेव जिसने सेना में आने से पूर्व न तो बत्ती देखी थी। उसके लिए दाल और सवजी भी विलासिता थी। उपने गाँव में वह सिर्फ साग के उबले पत्तों के साथ भात खाया करता था। उसने कोई मन्दिर भी नहीं देखा था। मिठाई तक नहीं चखी थी। दही तक नहीं खाया था। देश में स्वाधीनता संग्राम की लौ भी सबसे पहले इन्हीं इलाकों में जली थी। "गाँधी से पूर्व भी इन आदिवासियों के इलाके में सिन्धु, काँहा जतरा और बिसरा जैसी लोग देश की स्वाधीनता के लिए अपनी शहादत दे चुके थे पर इतिहास ने उनके साथ न्याय नहीं किया। देश उन्हें याद नहीं करता।"[10]

अन्ततः हम पाते है कि इस उपन्यास में लेखिका ने उन सभी कारणों को हमारे सामने उपस्थित किया है जो हमारे जीवन को विषाक्त बना देते हैं। व्यवस्था किस प्रकार व्यक्ति को बौना बना रही है। ये उपन्यास हमें यह साफ दिखाता है। उपन्यास मर्मस्पर्शी तो है ही रोचक भी है। अपने लक्ष्य में मधु कांकरिया सम्पूर्णतः सफल रही हैं।

1. सूखते चिनार पृष्ठ - 8
2. वही पृष्ठ - 17
3. " पृष्ठ - 115
4. " पृष्ठ - 45
5. " पृष्ठ - 23
6. " पृष्ठ - 131
7. " पृष्ठ - 135
8. " पृष्ठ - 133
9. " पृष्ठ - 71
10. " पृष्ठ - 88